# फ़ातिहा का सुबूत

आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो
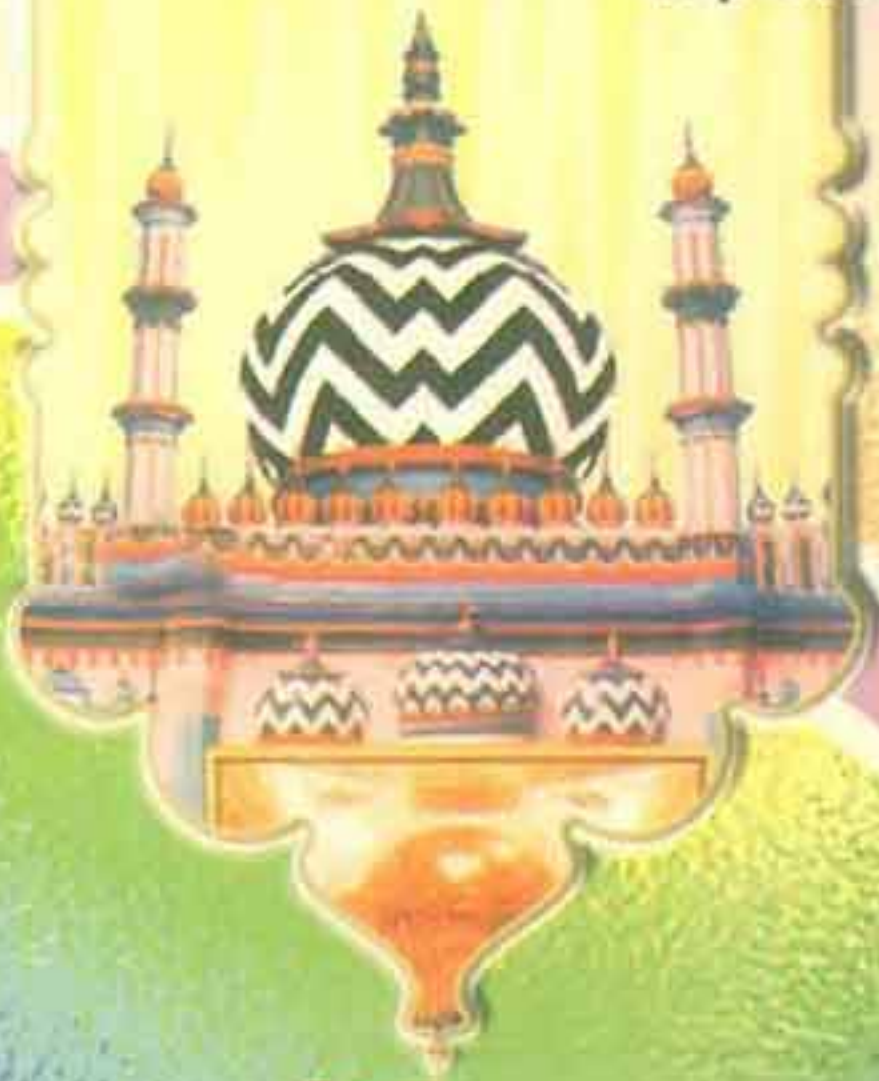
उर्स और चालीसवें वग़ैरा का दिन मुक़र्रर करना और ईसाले सवाब जाएज़ है, वफ़ात के बाद अर्वाह अपने घर आ कर सदक़ात व ख़ैरात का सुवाल करती है ----- इन दो मसअ्लों की तफ़्सील इस रिसाले में मुलाहज़ा करें।

तसनीफ़े लतीफ़

अअ्ला हज़रत इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन-ो मिल्लत

**मौलाना शाह अहमद रज़ा क़ादिरी**

बफ़ैज़

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ्ज़म हज़रत अ़ल्लामा शाह

***मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी***

हिन्दी कर्ता

मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी (बी.ए.)

بسم الله الرحمن الرحيم

# आस्माने' अह्ले सुन्नत का दरख़्शाँ आफ़्ताब

अअ्ला ह़ज़रत इमाम अह्ले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ाँ साहिब बरेलवी कुद्दुस सिर्रहु की जाते गिरामी मुह्ताजे तआरुफ़ नहीं, अ़रब–ो अ़जम के अह्ले इल्म–ो फ़ज़ल ने आप को मौजूदा सदी का मुजद्दिदे बरह़क़ तस्लीम किया है। आप की अ़ज़्मत–ो जलालत का अंदाज़ा सिर्फ़ इस बात से किया जा सकता है कि आप ने पचास उ़लूम–ो फुनून में तस्नीफ़ फ़रमाई और आप की सलाहियत का अंदाज़ा इस से हो सकता है कि आप सिर्फ़ तेरह साल दस माह चार दिन की उ़म्र में तमाम उ़लूमे मुरव्वजह की अपने वालिद इमामुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अली ख़ाँ कुद्दुस सिर्रहु से तक्मील करके मस्नद तदरीस–ो इफ़्ता पर फ़ाएज़ हो गए और तमाम उ़म्र ख़िदमते दीन में सर्फ़ कर दी आप की ज़िन्दगी का वाह़िद नसबुलऐ़न नबीए अकरम, सरवरे दो आलम ﷺ की अ़ज़्मत–ो रिफ़अ़त–ो शान से लोगों का आगाह करना था।

*गुम रिज़ाइश दर रिज़ाए मुस्तफ़ा*
*जाँ सबब शुद नामे ऊ अह़मद रज़ा*

आप के शब–ो रोज़ हुब्बे मुस्तफ़ा ﷺ की सर शारी में गुज़रते आप का मतमहे नज़र ये था कि तमाम मुसलमान अपने आक़ा व मौला की मह़ब्बत की कैफ़–ो मस्ती में डूब जाएँ ताकि सह़ी मअ़्नों में मुसलमान बन सकें और उन्हें राहे शरीअ़त पर साबित क़दमी नसीब हो और कुफ़्र–ो जलालत व बद मज़हबी की मुहीब घाटियों से

कुल्लियतन दूर हो जाएँ हजरते सदरुल अफाजिल मौलाना नईमुद्दीन साहिब मुरादाबादी कुद्दुस सिर्रहु' ने एक दफ़अ अर्ज़ की कि आप अपनी तहरीर में इतनी शिद्दत न इस्तेअ्माल फ़रमाया करें ताकि हर शख़्स उन से फ़ाएदा हासिल कर सके आप ने आबदीदा हो कर फ़रमाया मौलाना अगर मेरे पास इख़्तियार होता तो मैं शाने रिसालत के गुस्ताख़ों का सर कलम कर देता चूँकि ऐसा इख़्तियार मेरे पास नहीं इस लिए मैं पूरी शिद्दत से अपने कलम को इस्तेअ्माल करता हूँ ताकि वो लोग उस तरफ से हट कर मुझे तअ्न–ो नशनीअ का निशाना बना लें। यानी उतनी देर तो मेरे आक़ा व मौला के बारे में कुछ न कहेंगे। इसी तरह जैसे हज़रते हस्सान बिन साबित ﷺ ने कहा था।

(मेरे वालिदैन' मेरी इज़्ज़त, हजरत मुहम्मद ﷺ की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिए ढाल है)

आप ने एक हजार से जाएद काबिले क़द्र किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई उन में से हम ईसाले सवाब के लिए दिन मुक़र्रर करने के बारे में "अल हुज्जतुल फ़ाएहा लतीबुल तैईन व अल फ़ातिहा" मअ तर्जुमा और मौत के बाद अरवाह़ के अपने घरों में आने के मुतअल्लिक़। "ईतानुल अरवाह़ लदया हम बादुर्रवाह़" हदय–ए–नाजिरीन करने की सआदत हासिल कर रहे हैं। इस सआदत के हुसूल का ईमा जनाब साहिबजाद–ए–हज़रत सदरुश्शरीया मौलाना बहाउल मुस्तफ़ा क़ादिरी ने किया और क़ादिरी बुक डिपो ने इस के तबअ कराने का एहतमाम किया है।

अअ्ला हज़रत की विलादते बा सआदत 10 शव्वाल 1273 हिजरी मुताबिक 14 जून 1857 ईस्वी बरोज़ शंबा बरेली शरीफ़ महल्ला जसौली में हुई आखिर आप अर्सा तक शरीअत व तरीकत के मतवालों को कुरऑन–ो हदीस का शरबते जाँफिज़ा पिलाते हुए 25 सफर 1340 हिजरी जुमअ–ए–मुबारक के दिन उधर मुअ्ज्जिन ने हय्या अलल

फलाह्" कहा इधर आप अपने रब्बे क़दीर के दरबार में हाज़िर हो गए।

**क़ाज़ी अब्दुर्रहीम बस्तवी**

दारुल इफ़्ता मंज़रे इस्लाम महल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़
हदिय–ए–अक़ीदत ब–हुज़ूर "इमाम अहमद रज़ा" क़ुद्दुस सिर्रहुल अज़ीज़

अज़ जनाब नश्तर दुर्रानी रामपूरी हरी पूरा – हजारा

*ज़हे कि नुत्क़ है आसूद–ए–बयाने रज़ा*
*ख़ुशा कि कैफ़ियते मुनफ़रिद से पुर है फ़ज़ा*
*जवाबे क़ौसे क़ुज़ह जिस के दर का हर ज़र्रा*
*महक फ़रोज़ हैं गुलहाए गुलिस्ताने रज़ा*

● ● ●

*मर्दे हक़ मर्दे बा वफ़ाए रसूल*
*है रिज़ाए रज़ा रिज़ाए रसूल*
*सारे आलम को उस ने दर्स दिया*
*मुहरे ईमाँ है ख़ाके पाए रसूल*

● ● ●

*ख़ुदा के दीन–ो शरीअत का गौहरे नायाब*
*ज़माना पेश नहीं कर सका है जिस का जवाब*
*वो इल्म–ो हिकमत–ो दानिश के आस्माँ का शहाब*
*वो जिस के रू–बरू शर्मिंदा कुफ़्र का महताब*

● ● ●

*रमूज़े इल्मे शरीअत का राज़दार* ***'रज़ा'***
*उ़रूसे दीन का गेसू–ए–ताबदार* ***'रज़ा'***
*रसूले पाक की सुन्नत का पासदार* ***'रज़ा'***
*रिज़ाए क़ुदरत–ो क़ुदरत का शाहकार* ***'रज़ा'***

بسم الله الرحمن الرحيم

## इस्तिफ़्ता

तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ, शशमाही और सालाना (ईसाले सवाब) दयारे हिन्द में जो मुरव्वज है उसे बअ़ज़ ओलमा बिदअ़ते क़बीहा और मकरूह कहते हैं। और कई अक़वाल उस की दुरुस्तगी पर दाल हैं। आ़म लोग मुर्दों को सवाब पहुँचाने की नियत से खाने पकाते हैं और दोनों हाथ उठा कर फ़ातिहा पढ़ते हैं उसे ओ़लमाए ज़ाहिर ग़ैर मुक़ल्लिद फ़ातिहा की वजह से मुर्दार और ह़राम जानते हुए कहते हैं कि ये तरीक़ा ज़मानए नबवी सहा़बा किराम ताबिईन और तबेअ़ ताबिईन ﷺ के दौर में न था। लिहाज़ा बुज़ुर्गाने दीन की नियाज़ (ईसाले सवाब) का तआ़म और शी़रीनी मुर्दार की तरह़ है। बिना बरीं शरीअ़त का जो हुक्म वाजिबुल तअ़मील हो सनदे किताब से बयान फ़रमाएँ। बैनवा तोजरवा।

## अलजवाब

मुख़्तसरन इस मस्अ़ले में ह़र्फ़ आख़िर ये है कि ईसाले सवाब और अमवात को हदिय–ए–अज्र पहुँचाना तमाम अह्ले सुन्नत व जमाअ़त के इत्तिफ़ाक़ से पसंदीदा और शरीअ़त में मुस्तह़ब है हुज़ूर सय्येदुल अबरार अ़लैह अफ़्ज़लुस्सलात मिनल मुल्कुल जब्बार से बहुत सी ह़दीसें इस कारे ख़ैर की तर्ग़ीब व तरग़ीब में वारिद हुई हैं। इमाम अ़ल्लामा मुह़क़्क़िक़ अलल इतलाक़ ने फ़तहुल क़दीर में और इमाम अ़ल्लामा फ़ख़रुद्दीन ज़ैलई ने नसबुर्राया में और अ़ल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने शरहुस्सुदूर में अ़ल्लामए फ़ाज़िल मुल्ला अ़ली कारी ने मसलके मुतकसित में और दीगर अइम्मा ने दीगर कुतुब में उन में से

कुछ अहादीस जिक्र फरमाई हैं, बेशक इस कारे खैर का इन्कार बेवुकूफ जाहिल कर सकता है या फिर गुमराह और बातिल परस्त। इस दौर के अहले बिदअत (उमूरे खैर के मुन्किर) जिन में मख़्फ़ी तौर पर खूने एअ़तिज़ाल जोशे ज़न है मुअ़तज़िला की नयाबित और वकालत में ईसाले सवाब का इन्कार करते हैं और अहले सुन्नत के इजमाऐ यक़ीनी का यकसर इन्कार कर देते हैं। फिर (ये भी पेशे नज़र रहे) कि बहुत सी हदीसों की रौशनी में ये अम्र साबित है और इसी को जमहूरे अइम्मा ने सही व मुअ़तमद करार दिया है कि सवाब का पहुँचना अ़ेबादाते मालिया के साथ खास नहीं बल्कि अ़ेबादाते मालिया और बदनिया दोनों को शामिल है। यही अइम्म–ए–हनफ़िया का मज़हब है। बहुत से शाफ़ेई मुहक्क़िक़ इसी के क़ाएल हैं इसी पर अकसर ओलमा हैं और यही सही और राहिज–ो मन्सूर है फिर (ये भी तो देखिए) कि कुरआन मजीद को पढ़ना और सदका करना और इन दोनों का सवाब मुसलमानों को पहुँचाना इस में यही तो है कि एक अच्छे काम को दूसरे अच्छे काम से और एक मुस्तहब को दूसरे मुस्तहब से जमअ़ कर दिया गया है और हरगिज़ उन में से एक दूसरे को मनाफ़ी नहीं जैसे कि नमाज़ में कुरआन मजीद देख कर पढ़ना और न ही शरीअ़त ने इन दोनों के जमअ़ करने से मनअ़ किया है जैसा कि रुकूअ़ व सुजूद में कुरआन मजीद पढ़ने से। लिहाज़ा इन दो अच्छे कामों के जमअ़ करने) को ममनूअ़ कहना दाइरए अ़क्ल–ो खिरद से बाहर जाने के बराबर है इमाम हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद ग़ज़ाली कुद्दुस सिर्रहुल आली एह्याउल उलूम में फरमाते हैं कि **"जब एक एक काम हराम नहीं तो मजमूअ़ क्यों हराम होगा।"** इसी में है कि **"चन्द मुबाह जमअ़ हो जाएँ तो मजमूअ भी मुबाह रहेगा।"** इस नफ़ीस क़ाएदे की तह्क़ीक़, इमामुल मुदक्क़िक़ीन खातिमुल मुहक्क़िक़ीन हज़रते वालिद मौलाना नक़ी अली खान साहिब कुद्दुस सिर्रहुल माजिद ने किताबे मुस्तताब **"उसूलिर्रिशाद लिक़मऐ मबानिल फ़साद।"** में फ़रमाई है और ये मतलब सही हदीसों से इस्तंबात फ़रमाया है जो चाहे उस के

मुतालओ का शरफ हासिल करे खुद ननअ करने वाले फिरका के इमामे अव्वल मौलवी इस्माईल देहलवी के नज़्दीक कलाम मजीद और तआम के इज्तिमाअ की ख़ूबी मक़्बूल व मुसल्लम है **सिराते मुस्तक़ीम** में इस तरह राहे तस्लीम व एअ्तिराफ़ पर चलते हैं। **"जब मय्येत को नफ़अ पहुँचाना ही मक़्सूद है तो खाना खिलाने पर तवक़्क़ुफ़ नहीं होना चाहिए अगर मुयस्सर हो तो बेह्तर है वर्ना सूरए फ़ातिहा और इख़्लास का सवाब निहायत बेह्तर है।"** इस में शक नहीं कि ईसाले सवाब का तरीक़ा रब्बुल अरबाब जल्ल–ो अला के दरबार में दुआ ही है। इमामुत्ताइफ़ा **सिराते मुस्तक़ीम** में लिखते हैं **"मुसलमान जो अ़ेबादत अदा करे और उस का सवाब किसी गुज़रे हुए की रूह़ को पहुँचा दे और सवाब पहुँचाने का तरीक़ा जनावे इलाही में दुआ़ए ख़ैर है ये भी यक़ीनन बेह्तर और ख़ूब है और हाथों का उठाना मुतलक़ दुआ के आदाब से है।" हि़स्ने ह़सीन में फ़रमाते हैं।**

यानी सिह़ाह़ सित्ता की अह़ादीस से साबित है कि दोनों हाथों का उठाना आदाबे दुआ़ से है। हमारे अइम्मा व ओ़लमा का क्या पूछते हो ख़ुद ताइफ़ए मुन्किरीन का इमामे सानी (मौलवी मुह़म्मद इस्ह़ाक़) **"मसाइले अरबईन"** में कहता है कि तअ्ज़ियत के वक़्त दुआ के लिए हाथ उठाना ज़ाहिर ये है कि जाएज़ है इस लिए कि ह़दीस शरीफ़ में मुतलक़न दुआ के वक़्त हाथ उठाना साबित है लिहाज़ा इस वक़्त भी मुज़ाअ़्क़ा न होगा लेकिन बिलखुसूस तअ्ज़ियत के वक़्त दुआ के लिए हाथ उठाना मन्कूल नहीं है। देखिए बिलखुसूस व तअ्ज़ियत के वक़्त दुआ के लिए हाथ उठाने को ग़ैर मन्कूल कहा लेकिन मुतलक़ (दुआ के वक़्त हाथ उठाने की ह़दीस) से जवाज़ की ताईद की और कहा कि इस तरह़ करने में कुछ मुज़ाअ़्क़ा नहीं। अलह़ासिल इन उमूर से हरगिज़ कोई ऐसा अम्र नहीं जो शरीअ़ते मुतह्हरा में ना पसंदीदा हो महज किसी अम्र के खुसूसी तौर पर (ह़दीस शरीफ़ में) वारिद न होने को मुतलकन ममूनअ होने की दलील जानना वाजेह गलती और

जिहालत है फकीर ने बिफज़लिही तआला इस बह़स को मजमूआ मुबारका "अल बारिकतुल अल शारिका अला मारिकतुल मशारिका" में बड़ी तफ़्सील से जिक्र किया है। ओलमाए अह़ले सुन्नत ने इन दावेदारों को बारहा घर तक पहुँचाया और ख़ाके जिल्लत पर बिठाया है तफ़्सील और तवालत की जरूरत नहीं लेकिन......... इमामुत ताएफ़ा (अव्वल) ने अ़दमे वरूद को तस्लीम करने के बावुजूद इस मस्अ़ले में जो कुछ कहा है सुनने से तअल्लुक़ रखता है रिसालए मतबूआ़ जुब्दतुल नसाएह़ में तकरीरे ज़बीहा में कहते हैं "कुआँ खोदने और ऐसी ही दूसरी चीज़ों और दुआ व इस्तिग़फ़ार व कुर्बानी के अलावा कुरआन ख़्वानी फ़ातिहा ख़्वानी और खाने खिलाने के तमाम तरीक़े बिदअ़त हैं यानी बिलख़ुसूस बिदअ़ते ह़सना हैं जैसे ईद के दिन मुआ़नका करना और सुबह़ या अस्र की नमाज़ के बाद मुसाफ़ह़ करना।" ताएफ़ा (मुन्किरीन) ओ अपने इमाम से पूछना चाहिए कि आप......... इन तरीक़ों को उ़मूमन और फ़ातिहा ख़्वानी को खुसूसन बिदअ़त व मुह़दस जानने के बावुजूद "ह़सना" किस तरह कहते हो और ताएफ़ा (वहाबिया के ख़िलाफ़ रास्ता कैसे इख़्तियार करते हो फिर ईद के दिन मुआ़नके का ज़िक्र तो और भी दुश्वार है हाँ इस इमाम की तलव्वुन मिज़ाजी की वजह ही से उन के मुतब्बिईन को जान के लाले पड़े हुए हैं। वला ह़ौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाहिल अ़लीय्यिल अज़ीम और मुअ़ल्लिमे सानी (वहाबिया) का कलाम अभी गुज़रा है कि उस ने खुसूसियत के वारिद न होने के बावुजूद मुज़ाअ़का न जाना।

अब हम इमामुत्ताएफ़ा के अकाबिर व मुअ़तमेदीन व असातिज़ा व मशाएख़ से चन्द अक़वाल नक़्ल करते हैं, ताकि बेबाक रू जान लें कि शरीअ़त के मनअ़ किए बग़ैर "फ़ातिहा" को ह़राम कहना और फ़ातिहा के तआ़म" बुज़ुर्गाने दीन कुदस्त असरारहम की नियाज़ की शीरीनी को ह़राम व मुर्दार कहना कैसा सज़ाएँ चखाता है और कैसे बुरे दिन दिखाता है शाह वलीयुल्लाह अन्फ़ासुल आरिफ़ीन में अपने वालिदे माजिद शाह अ़ब्दुर्रह़ीम साहिब से नक़्ल करते हैं कि आप फ़रमाते थे।

(एक दफ़अ) हज़रत रिसालत पनाह की रेह्लत के दिनों में कोई चीज़ मुयस्सर न हुई कि खाना पका कर आप की नियाज़ दी जा सके मैंने कुछ भुने हुए चने और गुड़ बतौरे नियाज़ दिया "दरे शमीन फी मुब्शिरातुन्नबीय्युल अमीन" में इसी बात को इस तरह़ बयान करते हैं बाईस्वीं ह़दीस मुझे मेरे वालिदे माजिद ने बताया कि मैं नबीए अकरम ﷺ की ख़िदमत में सवाब पेश करने के लिए खाना पकाया करता था एक साल मुझे खाना तय्यार करने के लिए कुछ न मिला सिर्फ़ भुने हुए चने मिले मैंने वही लोगों में तक़्सीम कर दिए मैंने नबीए अकरम ﷺ को शादमान–ो फ़रहाँ देखा आप के सामने वही चने थे। यही शाह साहिब "इन्तिबाह फी सलासिले औलिया उल्लाह" में लिखते हैं कि कुछ शीरीनी पर उमूमन ख़्वाजगाने चिश्त के नाम फ़ातिहा पढ़ें और अल्लाह तआला से ह़ाजत की दुआ करें हर रोज़ इसी तरह़ पढ़ें।" लफ़्ज़ "शीरीनी" और फ़ातिहा हर रोज़ "क़ाबिले याद्दाश्त है।" यही शाह साहिबे हमआत में फ़रमाते हैं "इसी लिए मशाएख़ के उर्सों की पाबंदी और उन की क़बूर की बा क़ाएदा ज़ियारत और उन के लिए फ़ातिहा पढ़ने और सद्क़ा देने का इल्तिज़ाम किया जाता है।" यही शाह साहिब ज़ुब्दतुल नसाएह में मुन्दरजा फ़तवा में फ़रमाते हैं कि "अगर मलीदा और खीर बतौरे फ़ातिहा किसी बुज़ुर्ग की रूह़ को सवाब पहुँचाने की निय्यत से पकाएँ और खिलाएँ ता ह़र्ज नहीं है जाएज़ है और अल्लाह तआला की नज़्र का तआम (खाना) मालदारों को खाना जाएज़ नहीं और अगर किसी बुज़ुर्ग के नाम की फ़ातिहा दी गई हो तो अग़निया (मालदारों) को भी खाना जाएज़ है।" शाह साहिबे मरहूम अन्फ़ासुल आरिफ़ीन में रक़्मतराज़ हैं कि "वालिदे गिरामी क़स्बा डासा में मख़्दूम अल्लाह दिया की ज़ियारत को गए हुए थे रात का वक़्त था उस वक़्त उन्हों ने फ़रमाया कि मख़्दूम हमारी दअ़्वत कर रहे हैं और फ़रमाते हैं कि कुछ खा कर जाओ साथी ठहर गए ह़त्ता कि सब लोग चले गए और दोस्त परेशान हो गए। इतने में एक औरत आई और शीरीनी का थाल उस के सर पर था उस ने कहा मैंने नज़्र मानी थी

कि अगर मेरा शौहर आ जाए तो मैं उसी वक्त ये तआम पका कर मख़्दूम अल्लाह दिया कि दर्गाह के हाजिरीन के पास पहुँचाऊँगी मेरा शौहर उसी वक्त आया है मैंने नज़्र पूरी की मेरी आरज़ू थी कि इस जगह कोई मौजूद होता कि ये तआम खा ले।" मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहिब तोहफ़-ए-असना अशरिया में फरमाते हैं कि "हज़रते अमीर और आप की जरयते ताहिरा को तमाम उम्मत पीर-ो मुर्शिद की तरह मानते हैं? और उमूरे तकविनिया को उन से वाबस्ता जानते हैं। और फ़ातिहा, दुरूद-ो सदक़ात और नज़्र उन के नाम राएज-ो मअ्मूल है जैसे कि तमाम औलिया से यही मुआमला है।" ये अेबारत सरापा बिशारत जिस का हर हर हर्फ मुख़ालिफ पर तबाह कुन बिजली है, या हिलाकत आफ़रीं आँधी, याद रखने के क़ाबिल है और मुख़ालिफ़ीन से पूछना चाहिए कि शाह साहिब ने तुम्हारे तरीक़े के मुताबिक तमाम उम्मत को गुमराह व मुशरिक कहा है या नहीं और ख़ुद ऐसे उमूर की तजवीज़-ो तहसीन ज़ाहिर करके काफ़िर-ो मुश्रिक हुए या न। बर तकदीरे अव्वल इमामुत्ताएफा इस्माईल देहलवी जो आप का गुलामे गुलाम और मुरीदे मुरीद (सय्येद अहमद साहिब) है और सिराते मुस्तकीम में शाह साहिब की तअ्रीफ में इस तरह रतबुल लिसान है "जनाब हिदायत मआब कदव-ए-अर्बाब सिद्क-ो सफाए ज़ुबद-ए-अस्हाब फ़ना व बक़ा सय्येदुल ओलमा सनदुल औलिया हुज्जतुल्लाहि अलल आ-लमीन वारिसुल अंबिया वल मुर्सलीन मरजेअ कुल जलील व अज़ीज़ मौलाना व मुर्शिदना अश्शैख़ अब्दुल अज़ीज़" मआज़ल्लाह काफ़िर-ो मुश्रिक की ऐसे अज़्मत-ो जलालत वाले अल्फ़ाज़ से तअ्रीफ करके और हुज्जते ख़ुदा व नाएबे अंबिया वग़ैरा वग़ैरा का एअ्तिक़ाद करके ख़ुद काफ़िर मुर्तद हुआ या कुछ कमी रह गई फिर तुम जो उस काफ़िर व मुर्तद को इमाम-ो पेशवा सरवर-ो मुक़्तदा मरजेअ-ो मावा शुमार करते हो और हर मस्अला और हर अक़ीदा में उस के फरमान की लकीर पर सरे तस्लीम रख कर उस के क़दम ब-कदम चलते हो उस लिहाज़ से तमाम काफ़िर-ो बे दीन

मुर्तद–ो लईन हुए या कुछ और।

फिर हम मतलब की तरफ लौटते हैं ताएफा हादिसा के मुअल्लिमे सालिस (तीसरे) मौलवी खरमअले बिल्हौरी नसीहतुल मुसलिमीन में कहते हैं।" हाज़िरी हज़रते अब्बास की, सहनक हज़रत फ़ातिमा की। ग्यारहवीं अब्दुल कादिर जीलानी की। मालीदा शाह मदार का। सह मनी बू–अली कलन्दर की तोशा शाह अब्दुल हक का अगर मिन्नत नहीं सिर्फ उन की रूहों को सवाब पहुँचाना मक्सूद है तो दुरुस्त है। इस नियत से हरगिज़ मनअ नहीं" मुलहज़न खुद इमामुत्ताएफ़ा तकरीरे ज़बीहा में नगमा सरा हैं कि "अगर कोई शख़्स घर में बकरी की परवरिश करे ताकि उस का गोश्त ख़ूब हो जाए उसे ज़िबह करे और पका कर हज़रते गौसे अअ्ज़म ﷺ की फातिहा पढ़ कर खिला दे तो कुछ हर्ज नहीं है।" ख़्वान्दा ब- वान्द" (फ़ातिहा पढ़ कर खिला दे) के लफ़्ज़े काबिले ग़ौर हैं इस लिए बहुत से मुन्किरीन इस बात को भी बिनए इन्कार (इन्कार की वजह) बताते हैं कि अगर खिलाने और कुरआने मजीद पढ़ने को जमअ करना जाएज भी हो तब भी खाना खिला कर पढ़ना चाहिए न कि पढ़ने के बाद खिलाया जाए। इस लिए कि ये अबस (बेकार) और बातिल (ग़लत) शुब्हे का जवाब कामिल हम "बारिका शारिका" में दे चुके हैं इसी तरह लफ़्ज़े ग़ौसुल अअ्ज़म" भी काबिले याद्दाश्त है इस लिए ये "तकवियतुल ईमान" के ईमान के मुताबिक शिर्क है तुर्फ़ा ये कि जाहिल मुतब्बिईन, फ़ातिहा के खाने को हराम और मुर्दार जानते हैं और इमामुत्ताएफ़ा औलिया की नज़्र की गाय के गोश्त और खाने सब को हलाल कहता है ब–शर्ते–कि ज़िबह से मय्येत का तकर्रुब मक्सूद न हो और साफ़ कह रहा है कि जिस जानवर को औलिया की नज़्र किया गया हो चाहे वो लोग कई तरह की हराम व कबीह नज़्रें भी मानें फिर भी जानवर की हिल्लत में कलाम नहीं है च–जाए–कि जब औलिया की नज़्र बेहतर तरीके पर हो बिलखुसूस जब बिगैर नज़्र फकत ईसाले सवाब हो इस लिए कि उस जगह जानवर के ज़िबह करने और खून बहाने में कुछ असर नहीं

सिर्फ कुरआन मजीद का पढ़ना और तआम का सदका करना दर्मियान में आ जाता है तकरीरे मज़कूर ही लिखते हैं कि अगर एक शख़्स नज़्र माने कि मेरा फुलाँ मकसद पूरा हो गया तो उतनी नज़्र हज़रते सय्येद अहमद कबीर के नाम की दूंगा और उतना खाना उन की नियाज का लोगों को खिलाऊँगा अगरचे उस नज़्र में गुफ़्तगू है लेकिन तआम हलाल है गोश्त का भी यही हुक्म है मसलन एक शख़्स कहता है कि मैं अपना मकसद पूरा होने के बाद दो सेर गोश्त सय्येद अहमद कबीर की नज़्र के तौर पर लोगों को खिलाऊँगा गोश्त हलाल है और अगर कहे कि गाय का गोश्त खिलाऊँगा तो भी जाएज़ है और अगर इसी इरादे से गाय नज़्र करे वो भी जाएज़ है इस लिए कि उस का मक्सूद गोश्त है इसी तरह अगर ज़िन्दा गाय सय्येद अहमद कबीर के नाम पर किसी को दे जैसे नक्द पैसे दिए जाते हैं जाएज़ है और उस का गोश्त हलाल है।" इसी तक़रीर में है कि अगर इसी तरह गुज़श्ता औलिया कुद्दुसुल्लाह सिर्रहुम की नज़्र दे तो जाएज़ है फर्क इतना है कि आलमे दुनिया से आलमे बरज़ख़ की तरफ़ इन्तिकाल की वजह से नक्द जिन्स और तआम से नफ़अ हासिल नहीं कर सकते बल्कि फ़कत उस का सवाब अल्लाह तआला उन की अरवाहे मुतह्हरा को पहुँचा देता है लिहाज़ा उन के हालाते हयात और बाद अज़ वफ़ात बराबर हैं"। फिर कहते हे कि "अगर नज़्र माने कि मेरी हाजत बर आई तो दो साला पली हुई गाय हज़रते गौसुल अअ्ज़म की नियाज़ दूँगा तो उस का हुक्म वही है जो खाने का हुक्म है अगर नज़्र अच्छे तरीके से है तो कुछ हरज नहीं और अगर कबीह है तो फेअ्ले हराम है और हैवान हलाल।" गिन्ती में गौसे अअ्ज़म कुतबे मुकर्रम ﷺ की ग्यारहवीं के बराबर ये ग्यारह अकवाल हैं और इमामुत्ताएफा (मौलवी इस्माईल) के तीन कौल इस से पहले गुजर चुके हैं दो शाह अब्दुल अजीज़ साहिब से अन्करीब आएंगे अल्लाह तआला ही तौफीक और राहे रास्त की हिदायत देने वाला है।

रहा औकात का मुकर्रर करना जैसे लोगों में राएज है मसलन तीजा, चालीसवाँ, सालाना और शशमाही इस के मुतअल्लिक मैं कहता

हूँ और अल्लाह तआ़ला की इमदाद से बातिल शिकनी करता हूँ कि किसी काम का वक़्त मुक़र्रर करना दो क़िस्म है शरई और आ़दी। शरई ये कि शरीअ़ते मुतह्हरा ने किसी काम का वक़्त इस तरह मुक़र्रर कर दिया कि दूसरे वक़्त में बिल्कुल न हो सके और अगर अदा किया जाए तो वो शरई अ़मल न हो जैसे कि क़ुर्बानी के ख़ास दिन मुक़र्रर हैं या उस वक़्त से तक़्दीम-ो ताख़ीर नाजाएज़ हो जैसे कि अशहरुल ह़राम (शव्वाल ज़िल क़अ़्दा और दस दिन ज़िल ह़िज्जा के) ह़ज्ज के एह़राम के लिए (इन औक़ात से क़ब्ल गो एह़राम जाएज़ है लेकिन मकरूह है (तह़तावी) या जो सवाब उस वक़्त में है दूसरी जगह नहीं होगा जैसे कि इ़शा के लिए रात का पहला तेहाई ह़िस्सा। आ़दी ये कि शरीअ़त की तरफ़ से आम इजाजत है जब चाहें अदा करें लेकिन काम करने के लिए कोई ज़माना ज़रूर होना चाहिए ग़ैर मुअ़ैय्यन ज़माने में काम का होना अ़क़्लन मुमकिन है इस लिए कि वुजूद और तअ़युन लाज़िम व मल्ज़ूम हैं लिहाज़ा वक़्ते मुअ़ैय्यन के बिग़ैर चारा नहीं और ये तमाम मुअ़ैय्यन औक़ात आम इजाजत की बिना पर यके बाद दीगरे सलाहियत रखते हैं कि उन में से किसी एक में काम कर लिया जाए अगर उन में से किसी एक वक़्त को किसी मस्लह़त की बिना पर एख़्तियार कर लिया जाए और ये न समझा जाए कि उस वक़्त के अलावा ये काम सह़ी नहीं या ह़लाल नहीं या सवाब नहीं होगा तो ज़ाहिर है कि ऐसी तक़य्येद से मुक़य्येद मुतलक़ का फ़र्द होने से ख़ारिज नहीं होगा और जो हुक्म मुतलक़ का होगा वही उस के तमाम अफ़राद का होगा जब तक कि किसी फ़र्दे ख़ास की खुसूसन मुमानअ़त न हो। लिहाज़ा ऐसी जगह जवाज़ के क[illegible], खुसूसियत के सुबूत की दलील नहीं मांगनी चाहिए बल्कि मनअ़ करने वाले को शरीअ़त से इस ख़ास काम की मुमानअ़त दिखानी चाहिए तअ़्ज़ियत के वक़्त दुआ के लिए हाथ उठाने के मुतअ़ल्लिक़ ताएफ़ा (मुन्किरीन) के इमाम सानवी मौलवी इसहाक़ साहिब की इ़बारत आप सुन चुके हैं अब इस ताएफ़ा के मुअ़ल्लिमे अव्वल और इमामे मुअ़तमद की सुनिए वो

रिसाल–ए–"बिदअत" में नग़मा सरा हैं। दूसरा तरीक़ा ये कि किसी हुक्मे शरई का मुतलक़ की ज़ात से तअल्लुक़ हो लिहाज़ा मुतलक़ ज़ात के लिहाज़ से तमाम ख़ुसूसी अफ़राद में उसी हुक्म का तक़ाज़ा करेगा अगरचे बअ्ज़ अफ़राद में अवारिज़े ख़ारजिया के एअ्तबार से मुतलक़ का हुक्म मुख़्तलिफ़ हो जाए (यहाँ तक कि उस ने कहा कि) ख़ास सूरत के हुक्म की तह़क़ीक़ में जो शख़्स दअ्वा करता है कि ख़ास सूरत जिस में बह़स है उस का वही हुक्म है जो मुतलक़ का हुक्म है उस ने असल से इस्तिदलाल किया है। इस लिए कि वो मुह़ताजे दलील नहीं है उस की दलील वही हुक्मे मुतलक़ है और बस। ह़ज़रते वालिद (मौलाना नक़ी अली ख़ान) क़ुद्स सिर्रहुल माजिद ने इस नफ़ीस क़ाएदे की बे नज़ीर तह़क़ीक़ "उसूलुर्रिशाद में फ़रमाई है वहाँ देखी जा सकती है। हम फिर मक़सूद की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं फ़ाक़ौल (मैं कहता हूँ) अगर उस वक़्त मुअय्यन को इख़्तियार करने का ख़ुद उसी में कोई मुरह़ज पाया जाता है तो बेह्तर वर्ना अगर ये वक़्त दूसरे औक़ात की तरह ही है तो फ़ाइल का इरादा ही उस की तर्जीह़ के लिए काफ़ी है जैसे कि प्यासे के सामने पानी के दो प्याले हों या किसी आदमी के सामने दो रास्ते (एक जैसे) हों (जिसे चाहे इख़्तियार कर ले) ब–सूरते अव्वल (अगर ख़ुद वक़्त में कोई मरह़ज हो) मस्लह़त वाज़ेह़ है ब–सूरते सानी तअय्युन का कम अज़ कम इतना फ़ाएदा तो ज़रूर है कि उस काम की याद दिहानी हो जाती है नीज़ वो काम मअ्रिज़े ताख़ीर–ो इल्तवा में वाक़ेअ नहीं होता। हर अक़लमंद बख़ूबी मह़सूस करता है कि जब किसी काम का वक़्त मुक़र्रर कर दिया जाए तो उस वक़्त के आने से वो काम याद आ जाता है। वर्ना अकसर ऐसा होता है कि वो काम रह ही जाता है यही वजह है कि अहले ज़िक्र–ो शुग़ल और आबिद इबादत। अज़कार और अश्ग़ाल के औक़ात मुक़र्रर करते हैं कोई सुबह की नमाज़ से पहले सौ बार कलिमए तय्येबा लाज़िमन पढता है तो कोई इशा के बाद सौ मर्तबा ज़रूर दुरूदे पाक पढता है अगर इस तअय्युन को तअय्युने शरई न

माना जाए तो हरगिज़ शरीअत की तरफ़ से अेताब न होगा। जान बिरादर! अगर तू उस ताएफ़ा के अकाबिर व अमाइद की तसानीफ़ मसलन शाह वलीयुल्लाह साहिब की तस्नीफ़ "अलक़ौलुल जमील" और इमामुत्ताएफ़ा की सिराते मुस्तक़ीम वग़ैरा की तरफ़ ही रुजूअ करे तो तुझे कई ऐसे तअय्युनात का पता चलेगा जिन का इल्तिज़ाम किया जाता है मगर उन में तअय्युने शरई नहीं पाई जाती सिर्फ़ तअय्युनात का होता तो दूर की बात है तअय्युने अय्याम व औक़ात की भी क्या पूछते हो वहाँ तो ऐसे नव पैदा अअ्माल, अश्ग़ाल तरीक़ों और हैयात के अंबार लगे हुए हैं जिन का नाम-ो निशान तक क़ुरूने साबिक़ा में नहीं। खुद उन्हें इन के जदीद और नव पैदा होने का एअ्तराफ़ है शाह वलीयुल्लाह साहिब "अलक़ौलुल जमील" में कहते हैं :- صحبتنا وتعلمنا الاداب الطريقة المتصلة الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وان لم يثبت تعين الاداب ولا تلك الاشغال-

मौलवी इस इबारत के तर्जमा में कहते हैं "हमारी सुहबत और तरीक़त के आदाब सीखना मुतरस्सिल है रसूलल्लाह ﷺ तक अगरचे तअय्युन इन आदाब का और तक़र्रुराने अश्ग़ाल का साबित नहीं।" नीज़ अलक़ौलुल जमील के तर्जमा शिफ़ाउल अलील में कहते हैं "हज़रत मुसन्निफ़ मुहक़्क़िक़ ने कलामे दिल पज़ीर और तहक़ीक़े अदीमुन्नज़ीर से शुब्हाते नाक़िसीन को जड़ से उखाड़ा बअ्ज़े नादान कहते हैं कि क़ादिरिया और चिश्तिया और नक़्शबन्दिया के अश्ग़ाले मख़्सूसा सहाबा और ताबिईन के ज़माना में न थे तो बिदअते सईय्या हुए। इसी में शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब से बयान करते हैं। मौलाना हाशिये फ़रमाते हैं और इसी तरह पेशवायाने तरीक़त ने जलसियात और हैय्यात वास्ते अज़कारे मख़्सूसा के ईजाद किए हैं मुनासिबात मख़फ़िया के सबब से। फिर मौलवी खरमअ्ले खुद कहते हैं। यानी ऐसे उमूर को मुखालिफ़े शरअ या दाखिले बिदअते सईय्या न समझना चाहिए जैसा कि बअ्ज़े कम फ़हम समझते है इमामुत्ताएफ़ा मौलवी इस्माईल देहलवी

सिराते मुस्तक़ीम में कहते हैं "मुहक़्क़िकोन अकाबिरे तरीक़त ने तज्दीदे अश्ग़ाल में बहुत कोशिशें की हैं इस लिए बेहतर मालूम हुआ और वक़्त ने तक़ाज़ा किया कि एक किताब नए अश्ग़ाल के बयान के लिए जो इस वक़्त के मुनासिब हैं लिखी जाए और अश्ग़ाल की तज्दीद की जाए।" और अपने पीर के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं (सय्येद अहमद साहिब) ने तरीक़ए चिश्तिया की तअ़लीम-ो तल्क़ीन के लिए बाज़ूए हिम्मत खोला और उन अश्ग़ाल की तज्दीद की जिन पर ये मुबारक किताब मुश्तमिल है। सुब्हानल्लाह उन लोगों ने तुम्हारे क़ाएदे के मुताबिक़ दीन में नई चीज़ पैदा की और यक़ीनन ऐसी चीजें पेश कीं जिन का असर तक ज़मानए साबिक़ा में न था मगर गुमराह और बिदअ़ती न हुए बल्कि इसी तरह इमाम, मुक़्तदा, ओरफ़ा और ओलमा रहे दूसरे ओलमा ने सिर्फ़ ये जुर्म किया कि चन्द पसंदीदा और साबित फ़िश्शरअ उमूर को जमअ़ किया और जिन औक़ात में उन का करना जाएज़ था उन में से बअ़ज़ को मुअ़ैय्यन कर दिया मआज़ल्लाह वो इसी से गुमराह और बिदअ़ती हो गए ख़ुदारा इन्साफ़ कीजिए (ईं गुनाहस्त कि दर शहर शुमा नीज़ कुनन्द) इस लिए बे जा सीना ज़ोरी को क्या कहा जाए शायद शरीअ़त तुम्हारे घर की है कि जिस तरह चाहा फेर दिया। ऐ तालिबे ह़क़ तू इन्हें ह़द से तजावुज़ और सरकशी में ही रहने दे और आसार-ो अह़ादीस की तरफ़ मुतवज्जेह हो ताकि हम तुम्हें कुछ तअ़ैय्युनाते आ़दिया दिखाएँ। इसी क़िस्म में से है वो जो ह़दीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर सय्येदे आ़लम ﷺ ने शुहदाए उहुद की ज़ियारत के लिए आख़िर साल को मुक़र्रर फ़रमाया :-

जैसा कि अन्क़रीब आएगा और मस्जिदे क़ुबा तशरीफ़ आवरी के लिए हफ़्ते का दिन मुक़र्रर फ़रमाया जैसा कि सहीहैन में इब्ने उ़मर ؓ से है और शुक्रे रिसालत के तौर पर रोज़ा रखने के लिए पीर का दिन मुक़र्रर फ़रमाया। जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ में ब-रिवायते ह़ज़रते अबू क़तादा ؓ है और अबू बकर सिद्दीक़ ؓ से मश्वरा के लिए सुब्ह़-ो शाम का वक़्त जैसा कि सह़ी बुख़ारी में उम्मुल मोमिनीन

हज़रते सिद्दीक़ा ﷺ की रिवायत से है और सफ़रे जिहाद के लिए जुमेअ्रात का दिन जैसा कि बुख़ारी शरीफ में ब–रिवायत कअ्ब बिन मालिक ﷺ है और तलबे इल्म के लिए दो शंबा का दिन जैसा कि अबू शैख़ इब्ने हयान और दैलमी के नज़्दीक ब–रिवायत इब्ने मालिक सनदे सालेह़ से और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने वअ्ज़–ो नसीह़त के लिए जुमेअ्रात का दिन मुक़र्रर फ़रमाया जैसा कि इमाम बुरहानुल इस्लाम ज़र नौजी की किताब तअ्लीमुल मतअल्लिम में है इन्हें इमाम बुरहानुद्दीन मरग़ीनानी साहिबे हदायी ने अपने उस्ताज़ से रिवायत कि और कहा इमामे अअ्ज़म अबू ह़नीफ़ा ﷺ इसी तरह़ करते थे साह़िबे तनज़ीहुश्शरीआ ने फ़रमाया इसी तरह़ अहले इल्म करते थे ये सब तौक़ियते आदी की मिसालें हैं ह़ाशा व कल्ला कि सय्येदुस्सादात अ़लैह अफ़्ज़लुस्सलात व तस्लीमात की मुराद ये हो कि सिवाए इन्तिहाए साल के ज़ियारत नहीं होती या नाजाएज़ है या बन्दा नवाज़ी उम्मत परवरी और इक़दाम मुबारका से शुहदाए किराम के मज़रात को शरफ़ बख़्शने से जो अज्रे अ़ज़ीम सरवरे आ़लम सय्येदुल कौनैन ﷺ को अ़ता फ़रमाया जाता है। दूसरे वक़्त में नहीं अ़ता होगा। इसी तरह़ इब्ने मस्ऊद ﷺ का मक़्सद ये न था कि हफ़्ते के अ[illegible]ा तकरीर ही न होगी या नाजाएज़ है या दूसरे दिन ये सवाब न [illegible]गा या शरीअ़ते मुतह्हरा ने ये तअ़य्युन फ़रमाई है ह़ाशा व कल्ला हरगिज़ ये मक़्सद न था बल्कि आप ने इस आ़दत को अपने ऊपर लाज़िम किया था कि हर हफ़्ते में मुसलमानों को वअ्ज़–ो नसीह़त फ़रमाएँ और दिन मुअ़य्यन करने से ता़लिबाने ख़ैर का जमअ़ होना आसान होगा बाकी उमूर में भी तअ़य्युन इसी तरह़ से है उन में से बअ्ज़ में अलग मरज्जह मौजूद है जैसे पीर के दिन आप का मबऊस होना और इल्मे नुबुव्वत का ह़ासिल होना और जुमेअ्रात की सुबह का ख़ैर–ो बरकत वाली होना और बुध के दिन इब्तिदा करने से तक्मील की तवक्क़ोअ़ होना। क्यों कि ह़दीस में है कि जो चीज़ बुध के दिन शुरू की जाए वो मुकम्मल हो कर रहती है बअ्ज़ दीगर उमूर में सिर्फ़ तर्जीह इरादी होती

है कि इस में कम अज़ कम याद दिहानी और आसानी वाली मस्लिहत ज़रूर है तीजे, चालीसवें शशमाही और इन्तिहाए साल की तअय्युन आदी तअय्युन ही की क़िस्म है बअ्ज़ में कुछ मस्लिहत ख़ास होती है और बअ्ज़ में याद दिहानी और आसानी के पेशे नज़र मुअय्यन करने की आदत पड़ गई है। इस्तिलाह में किसे एअ्तराज़ हो सकता है इस जगह इमामुत्ताएफ़ा (मौलवी इस्माईल देहलवी) के नसब में चचा इल्म में बाप और तरीक़त में दादा मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब मुहद्दिस देहलवी की कलाम सुनने से तअल्लुक़ रखती है तफ़्सीरे अज़ीज़ी में आयते मुबारका والقمر اذا اتسق कमद अज़ा उत्सक के तहत फ़रमाते हैं हदीस में वारिद है कि मुर्दा इस हालत में डूबने वाले की तरह है जो किसी फ़र्याद रस का मुन्तज़िर रहता है इस वक़्त में दुआएँ, सदक़े और फ़ातिहा बहुत मुफ़ीद हैं इसी वजह से लोग एक साल तक खुसूसन मरने के बाद चालीस दिन तक इसी क़िस्म की इम्दाद पूरी कोशिश करते हैं।" कमाल ये कि शाह साहिब मौसूफ़ अपने पीराने उज़्ज़ाम और आबा के उर्स पूरे एहतमाम से करते थे और उन के सामने नेक लोगों की क़ब्रों पर लोग आप की तजवीज़–ो ताईद से जमअ होते फ़ातिहा ख़्वानी करते और तआम–ो शीरीनी तक़्सीम करते जैसा कि आम सज्जादा नशीनों में जारी है। मुफ़्ती अब्दुल हकीम पंजाबी ने शाह साहिब पर वही बे बुन्याद एअ्तराज़ात किए जो हज़राते मुन्किरीन करते हैं और शाह साहिब पर ज़बाने तअन–ो तश्नीअ दराज़ की और लिखा। वो लोग जिन के अफ़्आल उन के अक्वाल के मुताबिक़ नहीं वो अपने बुज़ुर्गों के उर्स को अपने ऊपर फ़र्ज़ की तरह लाज़िम जान कर साल ब–साल क़ब्र पर जमअ होते हैं और वहाँ तआम व शीरीनी तक़्सीम करके क़ब्रों का परस्तिश कर्दा शुदा बुत बना देते हैं। शाह साहिब ज़बीहा मतबूआ ज़ुबदतुन्नसाएह में इस तअन का जवाब फ़रमाते हैं क़ौलू उर्स बुज़ुर्गान ख़ुद ये तअन उस शख़्स के हालात से बे ख़बरी पर मुबनी है जिस पर तअन किया गया है इस लिए कि कोई शख़्स भी मुक़र्ररा फ़राएज़े शरीईया के अलावा किसी चीज़

को फर्ज़ नहीं जानता हाँ सालेहीन की कब्रों की जियारत उन से तबर्रुक हासिल करना सवाब और तिलावते कुरआन के हदिया से उन की इम्दाद करके दुआए ख़ैर करना और तआम–ो शीरीनी तक्सीम करना बेह्तर और ख़ूब है। ओलमा के इत्तिफ़ाक से और उर्स के दिन को इस लिए मुअय्यन किया जाता है कि वो दिन उन हज़रात के दुनिया से आख़िरत की तरफ़ इन्तिकाल की याद दिहानी करता है वर्ना जिस दिन भी ये अमल वाक़ेअ हो ज़रिअ–ए–नजात–ो कामयाबी है बाद वालो पर लाज़िम है कि अपने सलफ़ पर इस तरह के एहसान करें फिर इन्तिहाए साल की तअय्युन और उस के इल्तिज़ाम पर शाह साहिब ने हदीस शरीफ़ से दलील पेश की कि इब्ने मुन्ज़िर और इब्ने मरदवीया ने अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत की कि :–

ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کان یاتی احدا کل عام فاذا بلغ الشعب سلم علی قبور الشہداء فقال سلام علیکم بما صبرتم فنعم عقبی الدار

यानी हुज़ूर सय्येदे आलम ﷺ हर साल उहुद तशरीफ़ ले जाते जब पहाड़ पर पहुँचे तो शोहदा की क़ब्र पर सलाम कहते और फ़रमाते तुम पर तुम्हारे सब्र की वजह से सलामती हो दारे आख़िरत क्या ही अच्छा है। और इमाम इब्ने जुरैर ने अपनी तफ़्सीरे में मुहम्मद बिन इब्राहीम से रिवायत की उन्होंने कहा :– كان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یاتی قبور الشہداء علی راس کل حول فیقول سلام علیکم بما صبرتم فنعم عقبی الدار وابوبکر وعمر وعثمان۔

यानी सरवरे दो आलम ﷺ हर साल के आ[illegible] में शोहदा के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते और फ़रमाते सलामुन [illegible] लैकुम। आप के बाद हज़रते सिद्दीक व फ़ारूक और ज़ुन्नुरैन ﷺ इसी तरह करते थे और तफ़्सीरे कबीर में है :– عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انہ کان یأتی قبور الشہداء راس کل حول فیقول سلام علیکم بما صبرتم فنعم عقبی الدار والخلفاء الاربعۃ ھکذا یفعلون۔

यानी हुज़ूरे अक़दस ﷺ हर साल के आख़िर में मज़राते शोहदा पर जलवा अफ़रोज़ होते और आयते मज़्कूरा पढ़ते इसी तरह हज़राते ख़ोलफ़ा–ए–अरबआ رضي الله عنهم करते थे अलहासिल हक़ ये है कि तख़्सीसाते मज़कूरा (तीजा चालीसवाँ) तमाम तअय्युनाते आदिया हैं कि हरगिज़ जाएज़ तअ्न–ो मलामत नहीं हैं सिर्फ़ इतनी बात को ह़राम व बिदअत कहना वाज़ेह जिहालत और ख़ताए फ़ाश है शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब के भाई शाह रफ़ीयुद्दीन साहिब देहलवी मरहूम ने अपने फ़तवा में क्या ख़ूब इन्साफ़ की बात कही है उस की अेबारत इस तरह नक़्ल की गई है "**सवाल :** बुज़ुर्गों की फ़ातिहा में खाने की तख़्सीस जैसे कि इमाम हुसैन رضي الله عنه की फातिहा में खिचड़ा और अब्दुल हक़ رحمة الله تعالى عليه की फ़ातिहा में तोशा इसी तरह खाने वालों की तख़्सीस का क्या हुक्म है। **जवाब :** फ़ातिहा व तआम बिला शुब्हा मुस्तहसन है। तख़्सीस, मुख़स्सस का इख़्तियारी फ़ेअ्ल है जो मनअ करने का बाइस बन सकता है तख़्सीसाते उर्फ़िया और आदिया हैं जो ख़ास मस्लह़तों और मख़्फ़ी मुनासिबतों की बिना पर इब्तिदाअन ज़ाहिर हुईं, और रफ़्ता रफ़्ता आम हो गईं मैं कहता हूँ कि अगर यहाँ कोई भी दीनी मस्लह़त न होती ता–हम मस्लह़त के न होने को ख़राबी का होना लाज़िम नहीं आता कि इस काम का इन्कार किया जा सके वर्ना मुबाह़ काहँ जाएगा इमाम अह़मद ने मुस्नद में सनदे ह़सन से एक सह़ाबिया رضي الله تعالى عنها से रिवायत की कि हुज़ूर पुर नूर ﷺ ने फ़रमाया।(وصيام السبت لا لك ولا عليك) हफ़्ते के दिन का रोज़ा ने तेरे लिए और न तुझ पर ओलमा ने इस की शरूह में फ़रमाया (لا لك فيه مزيد ثواب ولا عليك) मज़ीद सवाब वला (فيه ملام ولا عتاب ـ) न तेरे लिए इस में ज़ियादती सवाब है और न तुझ पर इस में मलामत व अेताब है वाज़ेह हो गया कि अगर किसी मुख़स्सस के बिग़ैर तख़्सीस मुफ़ीद नहीं तो नुक़्सान नहीं तो नुक़्सानदेह भी नहीं (हमारा भी) यही मक़्सद है हाँ हर वो आम

आदमी (ख़ास आदमी साहिबे इल्म ऐसा गुमान रखेगा ही नहीं) कि उस तअय्युने आदी को तअय्युने शरई जाने और गुमान करे कि इन दिनों के अलावा ईसाले सवाब हो ही नहीं सकता या जाएज़ नहीं या इन दिनों में सवाब ज़्यादा है तो वो गलत, कारे जाहिल है और इस गुमान में झूटा और ख़तावार है लेकिन सिर्फ़ इतना गुमान मआज़ल्लाह अस्ल ईमान में ख़लल नहीं करता और न ही क़तई अज़ाब और यक़ीनी वईद का मौजिब है जैसे कि इमामुत्ताएफ़ा तक़्वियतुल ईमान में एअ़तक़ाद रखता है और उस की ये खुल्लम खुल्ला जिहालत उस आम आदमी की जिहालत से बर्दजहा बदतर है उस जाहिल का गुमान जिहालत-ो हिमाक़त से ज़ाएद नहीं मगर तक़्वियतुल ईमान क [illegible]ैसला पर ले दर्जे की गुमाराही और एअ़तज़ाल है वला हौला वल[illegible]ता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीज़ुल ह़मीद इस जगह भी बे वकूफ़ी कम अक़्ली और ख़िरद की कमी में इमामुत्ताएफ़ा का हिस्सा ज़ाहिर है उन्हें ये गुज़ारिश की जाएगी कि साहिबे इल्म जाहिल की तरह नहीं होता (आलिम की गलती ज़्यादा क़बीह़ होती है) इसी तरह़ अ़वामे जोह्ला ने ईसाले सवाब के बारे में जो ना पसन्दीदा उमूर पैदा कर रखे हैं मसलन दिखलावा। चर्चा और तफ़ाख़ुर मालदारों को जमअ़ करना और फ़ुक़रा को मनअ़ करना ऐसे ही तीजे में एक जमाअ़त एक जगह बैठ जाती है और तमाम लोग बुलन्द आवाज़ से कुरआन मजीद पढ़ते हैं और कुरआन मजीद सुनने के फ़रीज़े को तर्क कर देते हैं ये तमाम बातें ममनूअ़ मकरूह और ना रवा हैं। ओलमा को चाहिए कि ज़ाएद ख़राबियों पर लोगों को तंबीह करें न कि ज़बान की तेज़ी और रवानी के सहारे से अस्ल काम ही को ख़त्म कर दें जैसे कि अकसर अ़वाम नमाज़ के ख़ुसूसन नवाफ़िल जिन्हें वो तन्हा अदा करते हैं अरकाने नमाज़ को आहिस्ता आहिस्ता अदा करने और दीगर ममनूआ़त के आदी बन जाते हैं इस बिना पर उन्हें नमाज़ ही से न रोका जाएगा बल्कि उन ना पसन्दीदा

आदात से रोकना और डराना चाहिए और नमाज़ अदा करने का शौक़ व रग़बत दिलाना चाहिए ये मुख़्तसर तक़रीर और क़ौले फ़ैसलमुख़ालिफ़ीन के ख़्वास और उस तरफ़ के बअ्ज़ अ़वाम दोनों को नागवार होगा लेकिन क्या किया जाए कि हक़ यही है और हक़ से राहे फ़रार नहीं अल्लाह तआला ही राहे रास्त की हिदायत फ़रमाने वाला है।

---

گزشت۔ واللہ الهادی الی سبیل الرشاد والصلوٰۃ والسلام علی المولی الجواد محمد وآلہ وصحبہ الامجاد واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم۔

**कुतबा**

अ़बदल मुज़निब अहमद रज़ा अल बरेलवी ﷺ बिहम्दे अल मुस्तफ़ा अन्नबीय्यिल अल उम्मीय्यिल ﷺ।



---

क्या फ़रमाते हैं ओलमाए दीने मतीन व फ़ुज़लाए शरीअते अमीन मस्अला इस में कि किसी शख़्स ने एक कलाम मजीद तिलावत करके ख़त्म किया और इस का सवाब पन्द्रह शख़्सों की अरवाह़ को लिल्लाह बख़्शा उन रूहों में तक़्सीम हो जावेगा? यानी फ़ी रूह़ दो पारे पहुँचेगे या फ़ी रूह़ को पूरे कलाम मजीद का सवाब पहुँचेगा और नतीजा इस का दुनिया में मिलेगा या उ़क़्बा में। दूसरे ये कि सवाब किस तरह़ कह कर पहुँचाए?

## अलजवाब

अल्लाह ﷻ के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि हर शख़्स को पूरे कलाम मजीद का सवाब पहुँचेगा रद्दुल मुह़तार में है ( سئل ابن حجر المکی عما لو قرأ لاھل المقبرۃ الفاتحۃ ھل یقسم الثواب بینھم او یصل لکل منھم ) का मिला (مثل ثواب ذالک کاملا فاجاب بانہ افتی جمع بالثانی وھو اللائق بسعۃ الفضل) इस मस्अला की पूरी तह़क़ीक़ फ़तावा फ़क़ीर में है नतीजा मिलना अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में है मुसलमानों को नफ़अ़ रसानी से अल्लाह ﷻ की रज़ा व रह़मत मिलती है और उस की रह़मत दोनों जहाँ का काम बना देती है। आदमी को अल्लाह तआ़ला के काम में अल्लाह की निय्यत चाहिए दुनिया उस से मक़्सूद रखना ह़िमाक़त है दुआ करे कि इलाही जो मैंने पढ़ा उस का सवाब फुलाँ शख़्स या फुलाँ फुलाँ अश्ख़ास को पहुँचा और अफ़्ज़ल ये है कि तमाम मुस्लिमीन व मुस्लिमात को पहुँचाए मुतक़सित में है :- یقرا ما تیسر لہ من الفاتحۃ والاخلاص سبعا او ثلاثا ثم یقول اللھم اوصل ثواب ما قرأناہ الی فلان او الیھم۔ محیط و تتارخانیہ و شامی میں ہے۔ الافضل لمن یتصدق نفلا ان ینوی لجمیع المومنین والمومنات لانھا تصل الیھم ولا ینقص من اجرہ شئی۔

(फ़तावा रज़विया जिल्द ४ स. २०६)

# ईतानुल अर्वाह लिदयारहिम बअ्दर्रवाह

1321 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं ओलमाए दीन व शरअ़े मतीन इस मस्अ़ला में कि जिस वक़्त से रूह़ इन्सान की जिस्म से परवाज़ करती है बाद इस के फिर भी अपने मकान पर आती है या नहीं और उस से कुछ सवाब की ख़्वास्तगार ख़्वाह कुरआन मजीद या ख़ैरात वग़ैरा तआ़म हो या रूपया पैसा होती है या नहीं और कौन कौन दिन रूह़ अपने मकान पर आया करती है और अगर आती है तो मुन्किर उस का गुनहगार है या नहीं और अगर है तो किस गुनाह में शामिल है।

## अलजवाब

ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन शैख़ मुह़क़्क़िक़ मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رحمة الله تعالى عليه शरहे मिश्कात शरीफ़ बाब ज़ियारतुल क़ुबूर में फ़रमाते हैं। मय्येत के इस जहान से जाने के बाद मुस्तह़ब है कि उस की तरफ़ से सात दिन तक सद्क़ा दिया जाए ओलमा का इस में इत्तिफ़ाक़ है कि सद्क़ा मय्येत की तरफ़ से देना फ़ाएदामंद है इस के मुतअ़ल्लिक़ सही अह़ादीस वारिद हैं खुसूसन पानी के मुतअ़ल्लिक़ बअ़्ज़ ओलमा कहते हैं कि मय्येत की तरफ़ सद्क़ा व दुआ़ का सवाब पहुँचता है और बअ़्ज़ रिवायत में आया है कि मय्येत की रूह जुमअ़ की रात को अपने घर आती है और देखती है कि उस की तरफ़ से अपने और अक़ारिब सद्क़ा करते हैं या नहीं। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

गराएब और ख़ज़ाना में है कि मोमिनों की रूहें हर जुमअ की रात को ईद और आशूरा के दिन और शबे बराअत अपने घर आती हैं और दरवाज़े से बाहर खड़ी हो कर ग़म–ो अन्दोह के लहजे में बुलन्द आवाज़ से पुकारती हैं कि ऐ मेरे घर वाले ऐ मेरे बच्चो और ऐ अज़ीज़ो मुझ पर सदक़े के ज़रिअे मेहरबानी करो। इसी में शैख़ जलालुद्दीन सियूती رحمة الله عليه दर शरहुस्सुदूर अहादीसे शुत्ते दर अक्सर अज़ीं औक़ात आवुरदा अगरचे अक्सरे खाली अज़ ज़ोअ्फ़े नीस्त अकसरे का लफ़्ज़ सरीह दलालत कर रहा है कि बअ्ज़ बिल्कुल ज़ोअ्फ़ से ख़ाली हैं तो साहिब माएते मसाएल का मुतलक़न उन की तरफ़ ज़ोअ्फ़ की निस्बत करना कि" (अल्लामा जलालुद्दीन सियूती رحمة الله عليه ने शरहुस्सुदूर में उन में से अकसर औक़ात के मुतअ्ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ हदीसें नक़्ल की हैं। हमारे इमाम अअ्ज़म رضي الله عنه के नज़दीक हदीसे मौक़ूफ़ ग़ैर मर्फ़ूअ़ क़ौले सहाबी भी हुज्जत है कि ये सब मसाएल अदना तल्बए इ़ल्म पर भी रौशन हैं और हदीस सही का इन छः किताबों में महसूर न होना भी इ़ल्मे हदीस के अबजद ख़ानों पर बय्येन और मबरहन है। तुर्फ़ा ये कि ख़ुद साहिब माआते मसाएल ने इस किताब और अरबईन में और बुज़ुर्गाने ख़ानदाने देहली जनाब मौलाना शाह अ़ब्दुल अज़ीज़ साहिब व शाह वलीयुल्लाह साहिब ने अपनी तसानीफ़े कसीरा में तो वो रिवायाते ग़ैर सहाह व रिवायात तब्क़ए अरबआ़ और उन से भी नाज़ल तर से इस्तनाद किया है जैसा कि इन कुतुब के अदना मुतालआ़ से वाज़ेह व मुबय्येन है। इमाम अजल अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه से मौक़ूफ़न और इमाम अहमद मुस्नद और तबरानी मुअ़ज्ज़म कबीर और हाकिम सही मुस्तदरक अबू नईम हुल्या में बसनदे सही हुज़ूर पुर नूर सय्येदे आलम ﷺ से मरफ़ूअन रावी कि बेशक दुनिया

काफ़िर की बहिश्त और मुसलमान का क़ैद खाना है जब मुसलमान की जान निकलती है तो उस की मिसाल ऐसी है जैसे कि कोई शख़्स क़ैद ख़ाना में था अब आज़ाद कर दिया गया तो ज़मीन में गश्त करने और बा फ़रागत चलने फिरने लगा। अबू बकर की रिवायत यूँ है जब मुसलमान मरता है उस की राह खोल दी जाती है कि जहाँ चाहे जाए इब्ने अबीदुनिया व बैहक़ी सईद बिन मसीब ﷺ से रावी हज़रते सल्मान फ़ारसी व अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ बाहम मिले एक ने दूसरे से कहा कि अगर तुम मुझ से पहले इन्तिक़ाल करो तो मुझे ख़बर देना कि वहाँ क्या पेश आया कहा क्या ज़िन्दे और मुर्दे भी मिलते हैं कहा, बेशक मुसलमानों की रूहें तो जन्नत में होती हैं उन्हें इख़्तियार होता है जहाँ चाहें जाएँ इब्ने मुबारक किताबुज़्ज़ुहद व अबू बकर इब्ने अबीदुनिया व इब्ने मुन्दा सल्मान ﷺ से रावी, बेशक मुसलमानों की रूहें ज़मीन के बर्ज़ख़ में हैं जहाँ चाहें जाती हैं और काफ़िर की रूह सिज्जीन में क़ैद है। इब्ने अबीदुनिया इमाम मालिक رحمۃ اللہ علیہ से रावी, मुझे हदीस पहुँची है कि मुसलमानों की रूहें आज़ाद हैं जहाँ चाहें जाती हैं। इमाम जलालुद्दीन सियूती رحمۃ اللہ علیہ ने शरहुस्सुदूर में फ़रमाते हैं, इमाम अबू उमर अ़ब्दुल बर ने फ़रमाया राहिज ये है कि शहीदों की रूहें जन्नत में हैं और मुसलमानों की फ़नाए क़बूर पर जहाँ चाहें आती जाती हैं। अ़ल्लामा मुनावा तैसीर शरह जामेअ़ सग़ीर में फ़रमाते हैं, बेशक जब रूह इस क़ालिब से जुदा और मौत के बाइस क़ैदों से रिहा होती है जहाँ चाहती है जोलाँ करती है क़ाज़ी सनाउल्लाह (पानी पती) भी तज़्किरतुल मौता में लिखते हैं। औलिया की रूहें ज़मीन आस्मान और बहिश्त में से जहाँ चाहती हैं चली जाती हैं। बअ़ज़ ओ़लमाए मुहक़्क़िक़ीन से मरवी है कि रूहें शबे जुमअ़ छुट्टी पाती

हैं फैलती हैं पहले अपनी क़ब्रों पर आती हैं फिर अपने घरों में, दस्तरुल क़ज़ाह मुस्तनद साहिब मआते मसाएल में फ़तावा इमाम नस्फ़ी से है, बेशक मुसलमानों की रूहें हर रोज़ शबे जुमअ अपने घर आती और दरवाज़े के पास खड़े हो कर दर्दनाक आवाज़ से पुकारती हैं कि ऐ मेरे घर वालो ऐ मेरे घर वालो ऐ मेरे बच्चों अज़ीज़ो हम परसदका से महेर करो हमें याद करो भूल न जाओ हमारी ग़रीबी में हम पर तरस खाओ। नीज़ ख़ज़ानतुर्रिवायात मुस्तनद साहिब मआते मसाएल में है, इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है जब ईद या जुमअ, या आशूरे का दिन या शबे बराअ़त होती है अमवात की रूहें आकर अपने घरों के दरवाज़ों पर खड़ी होती और कहती हैं। है कोई कि हमें याद करे, है कोई कि हम पर तरस खाए, है कोई कि हमारी गुर्बत की याद दिलाए इसी तरह कंज़ुल अेबाद में भी किताबुर्रौज़ा इमाम ज़िन्दवेसी से मन्कूल ये मस्अला कि न अक़ाएद का है न फ़िक़ह के ह़लाल–ो ह़राम का ऐसी जगह दो एक सनदें भी बस होती हैं न कि इस क़दर कसीर–ो वाफ़र। इमाम जलालुल मिल्लते वद्दीन सियूती फ़रमाते हैं, यानी मैंने ये ह़दीस किसी किताबे ह़दीस में न पाई मगर साहिबे इक़्तिबासुल अनवार और इब्नुलह़ाज ने मुदख़ल में इसे एक ह़दीसे तवील में बे सनद ज़िक्र किया ऐसी ह़दीस को इतनी ही सनद काफ़ी है कि वो कुछ अह़काम से मुतअ़ल्लिक नहीं, बाक़ी रहा ज़लाल ह़ाल के शैखुलज़लाल ● गंगोही का बराहीने कातेआ में ज़ोअ़मे बातिल कि अरवाह़ का अपने घर आना ये मस्अला अक़ाएद का है इस में मश्हूर व मुतवातिर सह़ाह़ की ह़ाजत है क़तईयात का एअ़्तबार है न

---

● मौलवी रशीद अहमद गंगोही जिन के अक़वाल बराहीने कातेआ की सूरत में जमअ किए गए।

जन्नियात सहाह़ का। यानी गर सही बुख़ारी व सही मुस्लिम की भी सही व सरीह ह़दीसों में हो कि रूहें आती हैं तो वो ह़दीसें भी उन के धरम में मरदूद होंगी कि इन रिवायात में अ़मल नहीं है बल्कि इल्म है और तस्लीम भी कर लिए तो फ़क़त अ़मल है न फ़ज़्ले अ़मल। बराहीने क़ातेआ ♦ में चार वरक़ से ज़ाएद पर यही अअ़जूबा अज़्हवा कि तरह़ तरह़ के मुज़्ख़रफ़ात से आलूदा अन्दूदा किया है सख़्त जिहालते फाह़िशा है। **क़ौल** अगर जुम्ला ख़बर ये जिस में किसी बात का ईजाब या सलब हो अगरचे इसे नफ़्यन व अस्बातन किसी तरह अक़ाएद में दख़्ल न हो नाफ़ी या मुस्बत किसी पर इस नफी व अस्बात के सबब हुक्मे ज़लालत व गुमराही मुह़तमिल न हो सब बाबे अक़ाएद में दाख़िल ठहरे जिस में अह़ादीसे बुख़ारी व मुस्लिम भी जब तक मुतवातिर न हों ना मक़्बूल ठहरें तो अव्वलन ● सीर–ो मग़ाज़ी व मनाक़िब ये उ़लूम के उ़लूम सब गाओ ख़ोर्द दरया बुर्द हो जाएँ ह़ालाँकि ओ़लमा तसरीह़ फ़रमाते हैं कि इन उ़लूम में सुह़ाह़ दरकनार ज़ोअ़्फ़ भी मक़्बूल सीरत इन्सानुलऊ़यून में है।

**इस मुस्बह़स की तफ़्सील फ़क़ीर की किताब मुनीरुल अ़ैन फ़ी**

---

♦ यानी बराहीने क़ातेआ़ में मंबेअ़ इल्म सिर्फ़ इस बात पर सर्फ़ कर दिया कि इन रिवायात में अमल की बात नहीं बल्कि अक़ीदे का तज़्किरा है और अगर मान भी लिया जाए कि अ़मल मौज़ूअ़े सुख़न है तो सिर्फ़ अ़मल की बात होगी न कि फ़ज़ाएले अअ़्माल की हत्ता कि मुतवातिर और मशहूर के इलावा किसी ह़दीस को तस्लीम कर लिया जाए।

● यानी अगर हर क़ौल के लिए ख़बर मशहूर या मुतवातर ही दरकार हो इस के इलावा बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत भी मुसल्लम न हो चाहे वो क़ौल अक़ाएद से मुतअल्लिक हो या फ़ज़ाएले अअ़्माल से ख्वाह इस के मुस्बत–ो मुन्किर किसी को भी गुमराह न कहा जा सके तो इस परसात एअ़्तराजात होंगे। इस से बाद मुलाहिज़ा हों

हुक्मे तक़्बीलुल इब्हामीन में मुलाहज़ा हो यही देखिए रिसाए मज़कूर अमीरुल मोमिनीन क्या फ़ज़ाएले अअ्माल से था। वो भी बाबे इ़ल्म से है जिस में इमाम ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ ने बअ्ज़ ओलमा की बे सनद हिकायत भी काफ़ी बताई सानियन इ़ल्मे रिजाल मुर्दा हो जाए कि वो भी इ़ल्म है न अ़मल-ो फ़ज़्ल अ़मल और ग़ैर क़तईयात सब बातिल-ो मुहमिल। तीसरा, दो तिहाई से ज़ाएद बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसें मह़ज़ बातिल-ो मरदूद क़रार पाएँ। चौथा, अक़ाएद-ो अअ्माल में तफ़र्क़ा जिस पर इज्माअ़-ए-अइम्मा है ज़ाएअ़ जाए कि अह़कामे ह़लाल-ो ह़राम में किया एअ्तक़ाद व ह़िल्लत-ो हुरमत नहीं लगा हुआ है और वो अमल नहीं बल्कि इ़ल्म है तो किसी शय के ह़लाल या ह़राम समझने के लिए बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसें मरदूद और जब ह़लाल व ह़राम कुछ न जानें तो उसे क्यों करें। पाँचवाँ, बल्कि फ़ज़ाएले अअ्माल में भी अहादीसे सहीहीन का मरदूद होना लाज़िम। हालाँकि उस में ज़ईफ़ ह़दीसें भी ये सफ़िया ख़ुद मक़्बूल मानता है ज़ाहिर है कि इस अ़मल में ये ख़ूबी है। उस पर ये सवाब जानना ख़ुद अ़मल नहीं बल्कि इ़ल्म है और इ़ल्म बाबे अक़ाएद से है और अक़ाएद में सहा ज़नियात मरदूद। छटा, अगले साहिब ने तो इतनी मेहरबानी की थी कि ह़दीस सही मरफ़ूअ़ मुतस्सिलुस सनद मक़्बूल रखी थी। इन्होंने बुख़ारी व मुस्लिम भी मरदूद कर दीं। जब तक क़तईयात न हों कुछ न सुनेंगे। क़दम इश्क़ पेश्तर बेह्तर। सातवाँ ख़त्म इलाही का समरा देखिए इसी बराहीने क़ातेआ़ लमा अमरुललाह ब अन यौसुल में फ़ज़ीलते इ़ल्मे मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह ﷺ को बाब फ़ज़ाएल से निकलवा कर इस तंगनाए एअ्तक़ादियात में दाख़िल कराया ताकि सहीहीन बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसें भी जो वुस्अ़ते इ़ल्मे

मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह ﷺ पर दाल हैं मरदूद ठहरें। बराहीने क़ातेआ सफा. ५१ और वहीं वहीं औरसी मुँह में मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह ﷺ के इल्मे अज़ीम की तन्क़ीस को महज़ एक बे असल व बे सनद हिकायत से सनद लाया कि शैख़ अब्दुल हक़ रिवायत करते हैं कि मुझ को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं हालाँकि हज़रते शैख़ कुदस ने इसे हरगिज़ रिवायत न किया बल्कि एअ्तराज़न ज़िक्र करके साफ़ फरमा दिया था। "ईं सुख़न असला न दारद दर रिवायते बिदाँ सही न शुदा अस्त" गरज़ मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह ﷺ के फ़ज़ाएल मानने को तो जब तक हदीसे क़तई न हो बुख़ारी व मुस्लिम भी मरदूद और मआज़ल्लाह हुज़ूर की तन्क़ीस फ़ज़ाएल के लिए बे असल बे सनद बे सर–ो पा हिकायत मक़्बूल–ो महमूद और फिर दअ्वा ईमान–ो अमानत व दीन–ो दियानत बदस्तूर मौजूद इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ०! बिल जुम्ला ये मस्अला न बाबे अक़ाएद से न बाबे अहकाम हलाल व हराम से। उसे जितना मानना चाहिए इस के लिए इतनी सनदें काफ़ी व वाफ़ी। मुन्किर अगर सिर्फ़ इन्कारे यक़ीन करे यानी उस पर जुज़्म–ो यक़ीन नहीं तो ठीक है और आम मसाएल सीर–ो मगाज़ी व अख़्बार–ो फ़ज़ाएल ऐसे ही होते हैं इस के बाइस वो मरदूद नहीं क़रार पा सकते और अगर दअ्वाए नफ़ी करे यानी कहे मुझ मालूम व साबित है कि रूहें नहीं आतीं तो झूटा कज़्ज़ाब है। बिलफ़र्ज अगर इन रिवायात से क़तअ नज़र भी तो गायत ये कि अदमे सुबूत है न कि सुबूते अदम और बे दलील अदम इद्दआ–ए–अदम महज़ तहक्कुम–ो सितम आने के बारे में तो इतनी कुतुब व ओलमा की इबारात इतनी रिवायात हैं भी नफ़ी व इन्कार के लिए कौन सी रिवायत है किस हदीस में आया कि रूहों का आना बातिल व गलत है

तो अदाए बे दलील महज़ बातिल–ो जलील। "कैसी हटधर्मी है कि तरफे मकाबिल पर रिवायात मौजूदा सिर्फ़ बर बिनाए जोअ़फ मरदूद और अपनी तरफ़ रिवायत का नाम न निशान और इद्दआ–ए–नफ़ी का बुलन्द निशान। रूहों का आना अगर बाबे अक़ाएद में है कि (सुहाह़ भी मरदूद और दूसरी तरफ़ से ज़रूरियात में है कि असलन ह़ाजते दलील मफ्कूद।)

---

कुतबा

अ़बदल मुज़निब अह़मद रज़ा अल बरेलवी ؓ बिह़म्दे अल मुस्तफ़ा अन्नबीय्यिल अल उम्मीय्यिल ﷺ।